

[illegible]

[illegible]

॥ संशुद्धिप्रतिष्ठा ॥

महाप्रसिद्धा॥

महाप्रति

हा॥ सर्वभूतसुखदहर्निशाहा॥ सक्तिर्हृदयं मम सर्वसुखं च साहा॥ भौतिकनिशाहा॥ यद्विकनिशाहा॥ वलवर्द्ध
निशाहा॥ उं उय २ उय वगि कमल विमल साहा॥ उं विमल साहा॥ उं सर्वमथा गगनमूर्ति साहा॥ उं हः साहा॥ उं
उवः साहा॥ उं सः साहा॥ उं हः उवः साहा॥ उं उत्रि २ वड वगि सर्वमथा गगनद्वय संयुत निममायः सर्वा
वगि विल २ वल वगि उय विद्य ह २ हः साहा॥ उं जसृ ग वग वगः प्रवग विमु ह ह ह २ साहा॥ उं जसृ ग
विला कि निग ह सं नरु सिन्धु कर्ष सि ह ह २ साहा॥ उं विमल विमल उय वल जसृ ग विग उ ह ह २ साहा
हा॥ उं हनः सं हन २ ०० दिय वल विभा धनि नरे वल ह ह २ साहा॥ उं मलि धनि वडि सिम हा यगि स न ह ह
ह २ साहा॥ यसा कस्य विल हा वा दू ल जन या नथा गगन मूर्ति विद्या संग्र यद धा त्रिभू न शू कृ ना उकिं यत्रि ग
भयं त्रिग्र हं यत्रि याल नं भां गि ल सा य नं दं यत्रि हा न ग लु यत्रि हा नं विष द्र य सं विष ला भर्तृ कृ नं ह व ल सा यत्रि की
सा यः पर न न व विवे कं म सु चित्रं सखं डी विद्या नि ॥ उच्चा न र म मा ग्रे ल वा व डो व मा र्ज न न वा ज को ल म न र म ग् सर्व ६

卷二

॥ सुवर्चसस्तुतु ॥

वा विष्णुः परमेश्वरः सर्वभूतानां आश्रयः ॥ सर्वभूतानां आश्रयः सर्वभूतानां आश्रयः ॥
 कृष्णमहायानमस्तु ॥ ॥ श्रीमहायानमस्तु ॥ ॥ श्रीमहायानमस्तु ॥ ॥ श्रीमहायानमस्तु ॥
 मन्त्राणां गणेशः ॥ नमः सुवर्णरत्नाकरचक्रवर्तिनः ॥ नमः सुवर्णरत्नाकरचक्रवर्तिनः ॥
 था गणेशाय नमः ॥ नमः सुवर्णरत्नाकरचक्रवर्तिनः ॥ नमः सुवर्णरत्नाकरचक्रवर्तिनः ॥
 मन्त्राणां गणेशः ॥ नमः सुवर्णरत्नाकरचक्रवर्तिनः ॥ नमः सुवर्णरत्नाकरचक्रवर्तिनः ॥
 नामिनाय नमः ॥ नमः सुवर्णरत्नाकरचक्रवर्तिनः ॥ नमः सुवर्णरत्नाकरचक्रवर्तिनः ॥
 आनन्दमस्तु ॥ वायव्यं नमः ॥ नमः सुवर्णरत्नाकरचक्रवर्तिनः ॥ नमः सुवर्णरत्नाकरचक्रवर्तिनः ॥
 गणेशाय नमः ॥ नमः सुवर्णरत्नाकरचक्रवर्तिनः ॥ नमः सुवर्णरत्नाकरचक्रवर्तिनः ॥
 मन्त्राणां गणेशः ॥ नमः सुवर्णरत्नाकरचक्रवर्तिनः ॥ नमः सुवर्णरत्नाकरचक्रवर्तिनः ॥

श्रीः का

महाप्रति

२७

[illegible]

२४

知

नमो नमो ॥ वलाचनो नमो नमो ॥ वलाचनो नमो नमो ॥ गर्ह हनयः स्वाहा ॥ गर्ह धनयः स्वाहा ॥ गर्ह हानी श्रीः स्वाहा ॥
गर्ह संधानीयः स्वाहा ॥ चूल २ विमिश्र विमिश्र धनमी स्वाहा ॥ धानमी स्वाहा ॥ भूतः स्वाहा ॥ गंगा वायाः स्वाहा ॥ यिलि २ मि
लि २ स्वाहा ॥ मिलि २ वध २ स्वाहा ॥ मंथु लवंध स्वाहा ॥ सीमा वंध स्वाहा ॥ सर्वग फल भूतं जय २ स्वाहा ॥ जं हय २ स्वाहा ॥ सं हय स्वाहा
२ छिंदय २ स्वाहा ॥ छिंदय २ स्वाहा ॥ एंजय २ स्वाहा ॥ वंध २ स्वाहा ॥ मोहय २ स्वाहा ॥ मनि विभुद्ध स्वाहा ॥ सूर्य सूर्य विभुद्ध स्वाहा
॥ मधु धनि स्वाहा ॥ विम धनि स्वाहा ॥ वंजु २ पधूं वंजु स्वाहा ॥ ग्रहयः स्वाहा ॥ नक्षत्रयः स्वाहा ॥ पिभयः स्वाहा ॥ भिव
यः स्वाहा ॥ विमयः स्वाहा ॥ भंगियः पृष्ठियः स्वाहा ॥ खल्ययनयः स्वाहा ॥ गर्ह धनयः स्वाहा ॥ गिवं कवि गं कवि गं ॥
गिक्रिय विव्रिय वलवर्धनि स्वाहा ॥ श्री कवि स्वाहा श्री वरुनि स्वाहा वलवर्धन कवि स्वाहा ॥ श्री कालि नि स्वाहा ॥ म
वि स्वाहा ॥ नम्र वि स्वाहा ॥ मरु वि स्वाहा ॥ वग वगि स्वाहा ॥ उं स्वाहा ॥ उं सर्वगथा गगन भूर्धुवन विगन हय लभ हय
मि ॥ सर्वपाय स्वस्ति हं वं भुवन सर्व सत्त्वानां च स्वाहा ॥ उं मूनि २ विमूनि २ धनि २ वलि २ वलन हग वगि हय ह

लि। एयुहमलि। वाधि २ वाधय २ वद्धि लि २ यद्धि लि २ स्ताह ॥ सर्वगथा गगनदय २ स्ताह ॥ ॐ मनिश्वर २
 लि २ वद्धि मां सर्व निवात्रं सर्व सत्ता २ सर्वगथा गगनः सर्व विद्या लि २ कर्म हावज कवच मद्राम दिग्गः सर्वग
 था गगनदया विष्टि न पुद्ध मद्रवज स्ताह ॥ ॥ समं गद्ग लामाला विष्टि सुत्रि गविं गाम लिम हा मद्रा दया
 यायना जिनाम हा था लात्रेयं ॥ ॥ पन पुवं मयन मंठाः सिद्धाः सर्व कर्म कताः शु लः ॥ सर्व कामं ददा रदा कां
 यलमि शु लः थव ॥ गय था ॥ ॐ जमृग वनं वन २ यव न विष्टि दं २ र २ स्ताह ॥ ॐ जमृग विला किनि गरं सं
 रु निजा कर्ष लिहं २ र २ स्ताह ॥ ॐ यना जिना दयं ॥ ॐ विमल विष्टि लं जय वन २ यवादि निजमृग विष्टि २
 र २ स्ताह ॥ ॐ एन २ मं गन २ ॐ द्वियवल विष्टि धनिहं २ र २ स्ताह ॥ ॐ मधि धनि वजि लिम हा य
 निम न हं २ र २ स्ताह ॥ ॐ यद दय विद्या ॥ यथाः प्रवम मा पुर्न सर्व पायाः ॥ यथाः ॥ मयाय कवज काया नम
 रु लो ममानमः ॥ यास्म न न गह लान रु न्मा गनं क कि सं स्थि गः ॥ पुष्टि फ र्मो विधन यां नम रु लो ममानमः ॥ या

नमः निजः यं पुं कन सय व धाय गं ॥ विष्टि द ह म पुर्व वन म रु लो ममानमः ॥ वद्धि द काम हा ना आ य यात्र क्रि ग म रु क
 ॥ निपुं जि स्ता विमो डा र न म रु लो ममानमः ॥ विष्टि २ गाल को ना गी यथा कं ० पुवं धिगः ॥ या ह म क य यो र्ग
 न म रु लो ममानमः ॥ या ग रं द द वा मि ॥ म न रु क ॥ ॥ या स्म न नार्थ वा हा र न म रु लो ममानमः ॥ य य व य मि व द्वा
 यो ल यो यो म मा फ वान ॥ य सा नि ग र डा ना डा न म रु लो ममानमः ॥ द्वि द यो य मि स्त वा दी ना र पु द द डि न ॥ ना आ
 ली छ पु द ना र न म रु लो ममानमः ॥ यो पु व द्वा स र यं द ॥ ॐ जमृग वनं ॥ ॐ यना धा व धा हा यि पुष्टि क ॥ सर्व सं व ॥
 यो स्म नः य मि रु क र न म रु लो ममानमः ॥ यथा व धिगं ० ॥ यम क य य न रं क ठा ॥ न ग र ना य को र न म रु लो ममानमः ॥ या
 वा य ना जि ना वि द्वा सर्व दं ॥ धा रि ना ॥ म दि ना ल धि ना नि लुं या ठि ना य रं द मि ना ॥ ॥ लि वि ना मि दि ना स ल दि ना य य डि ना
 सदा ॥ स्म ना का य ग ना क लाम रु लो ममानमः ॥ यथाः प्रवम मा पुर्न सर्व पायाः ॥ यथाः ॥ मयाय कवज काया नम
 रु लो ममानमः ॥ या वि द्वा इ लं व द्वा कृ ना स पु र्ग सि ना ॥ म ह नी धा र नी स्ता ना सर्व पाय क यं क नी ॥ म हा व लाम हा वी र्ग म हा न

श्रीः का

महाप्रति

२८

कामहस्तुलामहाप्रतिविद्यासर्वमात्रविद्यानिधीययसंधिसमृद्धागीमात्रमभयभावनी॥जननीवाधिसत्त्वानांसर्व
 इष्टविनामिनी॥नक्षिणीयाविधीभागीयनमंगुविद्यामिनी॥कार्पादविषयागानांविध्यसुनकरीभावा॥महायाननगानां
 गुरुगोलिखगंगथा॥यापथयनकुमानिलंदधगंगुधगंगथा॥यत्रयोदिगुभावेनिलमनसिहाविगां॥सुयसुकरगंगां
 कृत्वायक्ष्मात्यनमस्तुगां॥सर्वपायहरीएडावाधिसंलग्नयनिधी॥नमस्तुलेनमस्तुलेनमस्तुलेनमानमभयस्यामंगुय
 लवनसर्वरयउघडवः॥इष्टःसुनमनस्याधदेत्यर्गधर्वत्राकसाः॥ग्रहाःकंधाजयस्मात्राः॥यिभावायक्रकिन्नराध
 जाकिन्नः॥माकिनीसंघानागाः॥कार्पादवाधयः॥किन्नराधविधवात्रागाः॥यत्रकर्मैकुवास्तथा॥विद्यात्रिगस्तुमंगुनिवि
 यत्रः॥कालवायवः॥मृगिवृष्टिप्रनावृष्टिः॥सर्वमकुहयानिवा॥गथान्ययसर्गवाविनर्थगिनसंभयः॥सर्वकार्या
 सिद्धिर्वागिनमस्तुलेनमानमः॥यत्रगंधात्रयद्विष्टांकुवाहोचमस्तुके॥नियंत्रकंतिदवासंदेनानागाश्रमानवा
 ॥गंधर्वाःकिन्नरायनाः॥रुद्रगणयिभावेकाः॥जाकिन्नराकसाहृत्तः॥कल्लुः॥कटयननाः॥प्रिसंधयः॥यः॥निर्यव

२८

द्वानकंमिमंसदा॥यस्यकाःश्रीकाथेवंवाधिसत्त्वामहर्दिकाः॥यागिनःसिद्धसंघाश्रमहावीर्यामहर्षयः॥वज्रयासिथयैकं
 दुःश्रुतश्रुतिदुःसह॥वत्तानश्रमहात्राजावृक्षाविष्णुमहेश्वराः॥नडिक॥ममहाकालः॥कार्पाकथागलभयः॥हरेव
 माहुरकाइगास्तथान्यमात्रकायिकाः॥विद्यादेवामहोवीर्यामरावलपराकर्माः॥मामकीहकटीनात्रावांकभीवज्रपुं
 खला॥महाएवामहाकालीवज्रहनीसूयामिका॥वज्रमालामहाविद्यासूवीर्यासुगकंउली॥वजायत्राडिनाचंजीकालकधी
 महावला॥गथाधन्यामहालग्नयमकंउलित्रववा॥मसिद्धदायुष्यदतीसुधूकभीययीगला॥पुकेउठामहादेवीधन्यावि
 यस्समालिनी॥कापालिनीवलंकभावेद्वीक्रिमिकनायिका॥हृतिगिपंविक्थेवभविनीकठदंतिनी॥श्रीःसुनसुगिले
 श्रीःसिद्धगतीसदानुगाः॥ममवान्यधिरकंमिथयविद्याकरस्त्रिगा॥सएवसर्वसत्त्वानांभाकसधंसुमयगः॥त्राजानाव
 मग्रास्तुत्यपथमिर्विवर्द्धयत॥सिद्धगंसर्वकल्याथयविष्ठाजिनमन्दित्र॥जंतवोद्वयदंयायाजिनस्यवचनंयथा
 यामुभात्रयमविद्यायस्यदुर्विहास्तुखंनयूगालगतयं॥वाधिमकस्तुत्वामिनी॥धनधान्यैर्वलेः॥यस्यामाननीया

श्री धा

महाप्रति

२२

धियं वद ॥ सुसुखा सुखकरी वडि नक्षत्रमवा प्रयाग ॥ २० ॥ सुखी वरु गवान् साव सर्ववर्मा यवद ल्यनंद दिवि मद्रा य
 निसनाम हा विद्या धारा समाया ॥ अथर्वशास्त्रं कलं वक्रं सत्त्वान्क मय्या ॥ यनन का विधानेन सर्व सिद्धि रवि
 ध्यानि ॥ यगुन का स्थि ना वयं गगन स्थिति बाधयः ॥ पापाद वयं हारि कृ विष गच्छ ॥ अजराः ॥ वक्रा श्रवा धिसत्त्वा थयु ल्यका
 सुधा ॥ दवा सुमनूष्या श्रुत कों कर्वे निगल्य व ॥ अनया कु मर क म्बु वधा र्हा धि विमया ॥ सुकार्द मृग काय वंस जीव नि
 न संभयः ॥ अस्याः प्रवक्ष्यामि सत्त्व सिद्धि र्विनि सर्वदा ॥ दवा श्रुत म्हा राजा ला कया ला श्रुत क का ॥ मग्न मंग यदा ॥ सिद्धा ॥ २१ ॥
 ॥ संन्य कं वद ह धिनाः ॥ मय था ॥ ॐ नमो वद्वाय ॥ नमो भर्मा यनमः संद्या य ॥ नमो रग वल्य भा क म न य म हा का र नि
 काय गथा गगा यार्द न स न्य कं वद्वाय ॥ नमः ॥ समं ग ल्यः ॥ सम्य कं वद्वे ल्यः ॥ ॐ गिरि र गिरि लि र गिरि व गिरि मु ल व गिरि ज
 का भव गिरि का भविषु कं सर्व पाय विग न्ना का भग ग मल जा का भवि वा नि सिम सि भ वि व डि सि क्क लि ग मि
 त्वं म सि म क्क र व वि ग मो लि ध न स क्क र स वं म स व क्क र स न य स व क्क र म्भू जे न ज गी न न न स न न न ना ग न य ल

ल्य न नमः सर्व वां वद्वानां कलि गो ज सां वद्वे स वद्वे रग व नि स न क्क र सि ज्ज य स क्क य स क्क म स य ल् स द म स दं ग
 स व न व न द य व न र ग व नि ल ड व नि स र ड व नि ल ड स र ड वि म ल ज य ल ड वं डि पु वं डि व ड व ड वं ड म हा वं ड द्या नि
 गं धा नि गे नि वं ज लि मा गं गि व र्वा सि स म ति य क्क नि स म ति ग व नि भा व नि गं क रि ड वि डि डा मि डि त्रो डि सि सर्वा र्थः
 सा ध नि य त्र मा र्थ सा ध नि ह न र स र्व ग क्क र ॥ ह न र स र्व र क्क र ना पु न यि म च ज कि नी म नू ष्या म नू ष्या नां ॥ य च र द्द क्यं
 वि धं स य डी वि गं स र्व र क्क य हा र्मा ना ग य र स र्व पा या नि म र ग व नि ॥ ग क्क र म म स र्व स त्त्वा नां व स र्व ग स र्व दा स र्व र या
 प ड व ल्यः ॥ स र्व र क्क य र क्क नां वं ध नं क र र स र्व कि लि ध ना ग नि मा र्क धु मृ ल्प दं उ मृ ल्प दं उ नि वा त सि मा न दं उ मा नि नि
 म हा मा नि नि मा न धा नि सि व ल यि व ल वि म लः वि डि र गि डि र नि ति र उ द्द द्या नि सि धा नि नि नि मि सि वा नि सि वा र्थ सि पु व न
 पु व न स म न वं ज लि मा गं गि र्वा सि क र सि म र सि व र्वा सि स म ति य क्क सि म व नि भा व नि गं क रि स म नि ड वि डि डा वि डि ह न नि द
 द नि य व नि या व नि म र्द नि स न ल स न ल स न लं र हा न म ध्या क्क र वि दा नि सि म हि लि म हा म हि लि नि ग न नि ग उ रं उ म क्क र

महापुत्रि

१००

त्वविदाय न हन २ सर्व भू न वज ग र्हा भय २ सर्व भु व नानि हं हं २ र स्वा हा ॥ यानया कृ ग न द्वा शु ग स्या यः सं वि व र्द्ध न ॥ ६
 स्तुतिमान स वि तं जी वी य ध्वा वां श्व सृ खी र व न ॥ सम द्वा न भ मा नु भ व जा व मा र्ज न न व ॥ अ प मृ त्प म हा वा विः सर्व नो ग
 श्व न भू ति ॥ नित्यं स्वा ध्या य ना त्या ह्य दाना भो ल वां रु मी ॥ वी र्य य नि र सं घ न्ना व ल ग जः य ना य वा न ॥ व द्वा श्व वो धि
 सृ त्वा श्व द वा सृ त्पु रु ष काः ॥ य द्वा गं ध र्व ना द्वा श्व सर्व भ व न दाय काः ॥ य वां गि र्य गा ना नां हि क र्ण वि श्या नि व द्वा गि ॥
 ग य वे व र्णि का वा ध र् वि वां गि न सं भ यः ॥ य न श्वा घा य न मं गः ॥ सर्व वि द्वा वि दा न काः ॥ सर्व सृ त्प दि ना र्था य नाः
 भृ त्पु र्ण य सं व द ॥ ग य था ॥ न मः ॥ सर्व ग था ग न त्या य गि र्णि द म सृ दि द्वा ॥ ॐ म नि व द्वा द द य व द्वा मा न स न्य वि दा न सि
 ह न २ सर्व भू न न र २ मां सर्व सृ त्वां श्व व द्वा २ व द्वा ग र्हा भय २ सर्व मा न र व नानि हं हं २ र स्वा हा ॥ व
 द्वा मे ग्नां सर्व ग था ग न व द्वा क ल्या वि ष्ठि न सर्व क र्मा व न द्वा न्य य म य स्वा हा ॥ ग द र्द सं य व द्वा मि ना गि र्णां य द्वा वि
 स्ति नं ॥ य उ न मं मं लं क र्या त्वा न म य स म न्दि नं ॥ यं व रं गि क र्ण न यि न य न्मं लं लं ॥ व उ नः य र्ण कं रं ॥

श्री श्री

महाप्रति

। सा ह्युग्र मर्द्धनि ।।

[illegible][illegible]

गासन॥हृदयं हृदयं हृदयं हृदयं हृदयं॥यदि किंचिन्नमं यथा यथा त्रिदं प्रकृतं सत्त्वं रजः॥एवं तु द्वित्रिणः सर्वथा शोच्य
 वसर्वथा॥कर्म यत्नं न लप्स्यमिद्यद्दं न नर्जिनाः॥नेपां वज्रधनः॥कर्म मर्दादीहृदयिष्यति॥नारुदिकृच्छिना नो हि न
 लगां गजसा प्रिया॥जंगलिकं गदाभासा सर्वश्रुति स मज्जना॥मनाव द्वाभवा विहः॥पीडलि सं न नाम य॥सर्वभूयर्वगः॥
 मानयष्टिकां वनसन्निहः॥यद्यप्यवदत्तः॥लगाज वयुष्मिणः॥यष्ट्यं दान विद्या धिन द्वाभेः॥यति वा त्रिणः॥सर्वभूयर्वगः॥
 काथने लक्ष्मिनि नावृणः॥प्रवं मुत्वा मनिः॥श्रुं लाकया लान था वृवीन॥न युयं लाकया लानां यथ दान न भ सने॥
 ॥मस्ति गलानि डयं वद्वधवा म्माधलः॥मल्ल्या ल्का मां यथा कं वधमं मान यं यडा॥प्रगद्वला लाकया ला प्रवं वद्वध
 था वृवन॥प्रगयि वान यिष्या मा यद्वद्वधमं उ ला गं दं उं यष्ट्या मः॥रुं वद्वधमं निर्मितं॥अथ ने श्रुमानि नाया वं नो इ
 दमान सो॥वंधिनाः॥पीडलि सं लाकना थं युम मित्र॥नमस्तु यथा वीर नमस्तु यथा कृत्तः॥पीडलि का न्नमस्या मो धर्म
 गाजन भा मु॥वंधव भानिर्न ला पीडलि काः॥यथा वद्वध॥वर्का क विप्र यत्र भयष्टिकां वनसन्निह॥लो क प्रधी न क र स

लोकनाथमहामुनि॥यद्यथाशुक्लंरुद्रायोऽयंमिहइहवान्॥गणोदंष्ट्रंयुष्मद्व्यामिलोकनाथस्यसंभवं॥गद्यथा॥यद्यथा
रुद्रमगर्हयिष्येकस्यवक्त्राङ्गनवन्दयपत्रयागालहीमयवर्गंवेतायुकटिलकनागुजकाक्रिवर्गवति॥सात्रेगवनिमर्ग
वनिगर्गवनिविगवनिविगुकीमिस्त्वस्तुममसर्वसत्त्वानांयात्रस्यादिमिस्त्वाह॥वद्वयायाथमत्रयलोकनाथमह
मत्राःयक्रधियमयःसर्वहात्रागीवसयत्रिकाः॥ॐमांयषीथगंधांथयगुजंउममीहमि॥वार्थलनडसाववासे
मर्थमवलनव॥निहनाःसर्वगागाथस्त्वस्तुममसर्वसत्त्वानांयसर्वरुद्रायुदवायसर्गल्यःस्वाह॥नमस्तय
प्रधावीननमस्तयप्रधातुम॥नस्तोमेमाडलिकनाधर्मनाडनमास्तुग॥भृगनाडुजिगेनत्वायावत्सक्तुगांड
लि॥रुद्रनामिप्रिवास्त्वस्तुममसर्वसत्त्वानांयसर्वरुद्रायुदवायसर्गल्यःस्वाह॥गंधर्वादिभिश्चयर्वा
मीउयंमिहइहवान्॥गणोदंष्ट्रंयुष्मद्व्यामिलोकनाथस्यसंभवं॥गद्यथा॥भनेसिधात्रमीयुर्धसनिहंउ
नियुहंउनिविधमेतिकिंयूयसकलसात्रेयसात्रेवनिधुलधत्रेयुलधात्रिनिमृद्वयत्रेहंघोषवति

सनाश भानि स्वस्त्यस्तु मम सर्वसत्त्वानां च सर्वस्य त्रिवागस्तु सर्वस्य यदवापेद्वैद्यो यस्तु र्गत्यः पूर्वस्यां दिशि स्था
 हा ॥ वृद्धाया यथ भवत् प्रलाकया लामह भृगोः यद्वा धियगयः सर्वहा गी नी व स य त्रि का ॥ ॐ मां येषां श्रगं
 धा धयुगुं नु ममाहमि ॥ वीर्यं भगवत् सा गयं भवत् यं भवत् लनव ॥ निदगाः सर्वगा गा श्रस्वस्त्यस्तु मम सर्वसत्त्वा
 नां च सर्वस्य यदवापेद्वैद्यः स्वाहा ॥ नमस्तु यत्र वा दीनमस्तु यत्र धातुम ॥ नमस्तु मां डलिकना धर्मनाडनमास्तु
 न ॥ नाडाया हसुनिर्नत्ता विरुद्धः कृतां डलिः ॥ सर्वरु सर्वदगी च सर्ववादि प्रमर्दक ॥ सर्वसंगय च ना च सर्वला
 कदिमायकः ॥ केलाश्रयस्ति नाया मयी उर्यगिरुहवान ॥ गंधादधु यल्लघ्यामिलाकनाथस्य संभवं ॥ गयथा ॥
 भानि सागवति कां गिका वति किं कसि किं न गि किं वे छि किं वरि धनं नि व धनि ह मि धा त्रि सि वि ह मि भा त्रि सि
 हि म व गि श्रि गि श्रि माला त्रि स्वस्त्यस्तु मम सर्वसत्त्वानां च सर्वस्य त्रिवागस्तु र्गत्यः पूर्वस्यां दिशि स्थाहा ॥ वृद्धाया यथ भवत् प्रलाक
 या लामह भृगोः यद्वा धियगयः सर्वहा गी नी व स य त्रि का ॥ ॐ मां येषां श्रगंधा धयुगुं नु ममाहमि ॥ वीर्यं भ

गडसा गे वा भवत् यं भवत् लनव ॥ निदगाः सर्वगा गा श्रस्वस्त्यस्तु मम सर्वसत्त्वानां च सर्वस्य यदवापेद्वैद्यः स्वाहा ॥ नम
 स्तु यत्र वा दीनमस्तु यत्र धातुम ॥ नमस्तु मां डलिकना धर्मनाडनमास्तु न ॥ विरुद्धः कृतां डलिः ॥ सर्वरु सर्वदगी च सर्ववादि प्रमर्दक ॥ सर्वसंगय च ना च सर्वला
 कदिमायकः ॥ केलाश्रयस्ति नाया मयी उर्यगिरुहवान ॥ गंधादधु यल्लघ्यामिलाकनाथस्य संभवं ॥ गयथा ॥ धर्मवनाय वलवति वलनिदि भां ग वि व मि सा ग ल ख त्रि क यि ल वं ग लि वि त्रि
 मि वि रा ड न वि रा ड नि वि धा त्रि वि म गि व धु वि मि भू व ल स्व स्तु मम सर्वसत्त्वानां च सर्वस्य त्रिवागस्तु र्गत्यः पूर्वस्यां दिशि स्थाहा ॥ वृद्धाया यथ भ
 वत् प्रलाकया लामह भृगोः यद्वा धियगयः सर्वहा गी नी व स य त्रि का ॥ ॐ मां येषां श्रगंधा धयुगुं नु ममाहमि ॥ वीर्यं भगवत् सा
 गयं भवत् यं भवत् लनव ॥ निदगाः सर्वगा गा श्रस्वस्त्यस्तु मम सर्वसत्त्वानां च सर्वस्य यदवापेद्वैद्यः स्वाहा ॥ नमस्तु यत्र
 वा दीनमस्तु यत्र धातुम ॥ नमस्तु मां डलिकना धर्मनाडनमास्तु न ॥ ॥ नथ वृद्धा भनिर्नत्ता यावदस्तु कृतां डलिः ॥
 वृद्धा भानि गः भर्तु सर्ववदयानगः ॥ वेद्यगडजाने दसर्वला क वि कि स्तु कः ॥ यच र द्य भ या धा ना द भ दि द्य व व छि
 ता ॥ गंधादधु यल्लघ्यामिलाकनाथस्य संभवं ॥ गयथा ॥ वृद्धा वृद्धा धि वृद्धा स्व व ड व ड धा ध व ड ध न लि त्रि सा ग न व ल न

